

भारत सरकार
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या 3340
शुक्रवार, 12 जुलाई, 2019 को उत्तर दिए जाने के लिए

गर्मी और घटते जल से निपटने के लिए प्रौद्योगिकी

3340. श्री एस०आर० पार्थिवनः

क्या पृथ्वी विज्ञान मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या सरकार ने वैश्विक तापन के कारण बढ़ती गर्मी और घटते जल साधनों का विस्तृत अध्ययन किया है या करने का विचार है; और
- (ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और उक्त प्रयोजनार्थ किस आधुनिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग किए जाने का प्रस्ताव है?

उत्तर
विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी तथा पृथ्वी विज्ञान मंत्री
(डॉ. हर्ष वर्धन)

- (क) और (ख) केन्द्रीय भू-जल बोर्ड समय-समय पर कुओं की निगरानी से जुड़े नेटवर्क के माध्यम से क्षेत्रीय स्तर पर देश भर में भू-जल स्तरों की निगरानी कर रहा है।

केन्द्रीय भू-जल बोर्ड और राज्य सरकारों द्वारा संयुक्त रूप से देश के गतिशील भू-जल संसाधनों का आकलन भी समय-समय पर किया जा रहा है। 2017 के आकलन के अनुसार, देश में कुल 6881 आकलन इकाइयों (ब्लॉक/ तालुका/ मंडल/ जल संभर /फिरका) में से, 17 राज्यों/ संघ शासित प्रदेशों की 1186 इकाइयों को "अत्यधिक दोहन " की श्रेणी में रखा गया है जहां कुल वर्तमान वार्षिक भू-जल निष्कासन, वार्षिक निष्कर्षणीय भू-जल संसाधन से काफी अधिक है।

केन्द्रीय भू-जल बोर्ड जलवाही स्तरों के मानचित्रण, उनकी विशेषताओं और भू-जल संसाधनों के सतत विकास को सुसाध्य बनाने हेतु जल वाही स्तरों के प्रबंधन योजनाओं के विकास के लिए "राष्ट्रीय जल वाही स्तरों के मानचित्रण और प्रबंधन (एनएक्यूयूआईएम)" नामक एक देशव्यापी कार्यक्रम कार्यान्वित कर रहा है। अभी तक लगभग 11 लाख वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को कवर किया जा चुका है। जल वाही स्तरों के मानचित्रों और प्रबंधन योजनाओं को संबंधित राज्य सरकार एजेंसियों के साथ साझा किया गया है। हितधारकों के लाभ के लिए जलवाही स्तर प्रबंधन योजना की नीतियों को प्रसारित करने के लिए सबसे निचले स्तर पर सार्वजनिक संपर्क कार्यक्रमों का आयोजन किया जा रहा है।

केन्द्रीय जल आयोग के अनुसंधान और विकास प्रभाग, परियोजना योजना विंग, जल संसाधन विभाग, नदी विकास और गंगा पुनरूद्धार विंग ने कुछ प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों को जल संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का अध्ययन करने का कार्य सौंपा है। ये अध्ययन जलवायु परिवर्तन पर बनी भारतीय राष्ट्रीय समिति के पर्यवेक्षण के तहत कार्यान्वित किए जाएंगे।

क्रम सं.	अध्ययन का नाम	संस्थान का नाम
1.	महानदी बेसिन की जल मौसम वैज्ञानिक प्रक्रियाओं और जल संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव का आकलन	आईआईएस सी बैंगलोर और आईआईटी ,भुवनेश्वर
2.	राजस्थान के लिए जलवायु परिवर्तन प्रभाव का अध्ययन (अंतर्देशीय जल निकासी क्षेत्र और और माही बेसिन)	एमएनआईटी जयपुर, आईआईटी दिल्ली और केन्द्रीय विश्वविद्यालय, राजस्थान
3.	लूनी नदी बेसिन जलवायु और जल वैज्ञानिक मॉडलिंग	आईआईटी, जोधपुर
4.	तापी बेसिन के जल संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव	एसवीएनआईटी सूरत, एमएनआईटी जयपुर तथा एमएनआईटी भोपाल
5.	साबरमती बेसिन के जल संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव	आईआईटी गांधीनगर, और एसवीएनआईटी सूरत
6.	तादरी से कन्याकुमारी तक नदी बेसिनों के जल संसाधनों पर जलवायु परिवर्तन का प्रभाव	आईआईटी मुंबई, एनआईटी सुरखतल तथा सीडब्ल्यूआरडीएम कोझीकोड
7.	सुवर्णा रेखा बेसिन में स्थानिक और कालिक जल उपलब्धता पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव और भू उपयोग/ भू कवर परिवर्तन	आईआईटी खड्गपुर
